Saarth E-Journal

Saarth E-Journal of Research

E-mail : sarthejournal@gmail.com
www.sarthejournal.com

ISSN NO : 2395-339X
Peer Reviewed
Vol.8 No.6

Impact Factor
Quarterly
Jan-Fb-March2023

उपेन्द्रनाथ 'अश्क' की रचना 'सुखी डाली'- एकांकी विशेष

प्रणवकुमार जमसुभाई पटेल

सारांश:

अश्क जी की प्रस्तुत एकांकी में दो पीढ़ियों के भावों और विचारों की टकराहट दिखाकर पाठकों को, दर्शकों को संयुक्त परिवार का महत्व समझाया गया है और बिखरते परिवार को समेटने की प्रेरणा दी गई है।

'सूखी डाली एकांकी में एक संयुक्त परिवार प्रणाली का चित्रण है। दादा, जो इस परिवार के मुखिया हैं, परिवार को एक बरगद के पेड़ के समान मानते हैं जिसका हर सदस्य पेड़ की डाली के समान पेड़ का एक प्रमुख अंग है। दादा जी के भरे-पूरे परिवार में छोटे पोते परेश की पत्नी बेला के आ जाने से परिवार में हलचल मच जाती है।

चाबिरुप शब्द: एकांकी, पात्र और चरित्र चित्रण, समाज, परिवार, परम्पराएँ, भाषा-संवाद।

प्रस्तावना और परिचय:

वर्तमान युग को सन्धिकाल कहा जाता है। पुराने विचार पुरानी परम्पराएँउप अभी मिटी नहीं हैं, नये विचार, नये संस्कार अभी आ नहीं पाये है। नतीजा यह होता है कि पुराने और नये में सर्वत्र संघर्ष दिखाई देता है। प्रत्येक कुटुम्ब में बूढ़े लोग पुरानी परंपरा के हैं नवयुवक और नवयुवतियाँ आधुनिक विचारों से प्रभावित है। फल यह होता है कि आये दिन उनमें खट-पट होती है और कहींकहीं तो गृहकलह का रूप धारण कर लेती है।

सामाजिक एकाकीकारों में उपेन्द्रनाथ 'अश्क' का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। इनका जन्म १४ दिसम्बर १९१०को जलन्धर में हुआ था। अश्क जी ने एक ऐसे समाज की कल्पना की है।जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार प्राप्त हों। अपने एकांकियों में अश्क जी ने दहेज, बेमेल विवाह और संयुक्त परिवार प्रणाली आदि पर भी चोटें की हैं। 'लक्ष्मी का स्वागत', 'पापी', ' अधिकार का रक्षक' और 'सूखी डाली', आदि एकांकी

अविस्मरणीय हैं। इसके अतिरिक्त 'वेश्या' और 'कामदा' नामक एकांकी भी सुन्दर हैं। अश्क जी ने जीवन की विषमताओं और विसंगतियों को अपने नाटकों में कुरेदा है। अश्क जी के प्रत्येक एकांकी में प्रमुख पात्र के मन में तीव्र असंतोष या विषाद का चित्रण हुआ है यही हमें 'सूखी डाली' में भी देखने को मिलता है। अश्क जी की भाषा नाटकों के लिए उपयुक्त भाषा है। छोटे-छोटे सरल संवादों से कथा विकसित होती है और पात्रों के चरित्र भी स्पष्ट होते चले जाते हैं। लेखक की लेखनी का कौशल है कि पात्रों के मन की बात स्वतः ही बाहर झलक उठती है। अभिनय की दृष्टि से भी अश्क जी के एकांकी उत्कृष्ट कोटि के एकांकियों में गिने जाते हैं क्योंकि उनमें अधिक साज-सज्जा और नाटकीय दृश्यों का झमेला नहीं होता। अश्क जी ने कुछ प्रहसन भी लिखे हैं। इन प्रहसनों में 'जोंक', 'आपसी समझौता' और 'विवाह के दिन' उल्लेखनीय हैं। अश्क जी के नाटकों में आदर्शवादिता लक्षित नहीं होती। दुखांत एकांकियों की प्रवृत्ति अश्क जी में भी है और इस प्रकार का अंत प्रायः सर्वश्रेष्ठ पात्र के भाग्य पर ही काली छाया बनकर मॅडराता है। इस प्रवृत्ति का कारण शायद अश्क जी का यही विचार है कि संसार का ढाँचा बिगड़ा हुआ है जिसमें सत्य और आदर्श का अनुयायी ही सदैव पीसा जाता है। अश्क जी ने साम्यवादी समाज की स्थापना का स्वप्न देखते हुए अपने नाटकों एवं एकांकियों में पूँजीवादी मनोवृत्तियों की आलोचना की है। इस प्रकार हिन्दी एकांकी के प्रमुख शिल्पियों में अश्क जी का नाम अत्यंत आदर से लिया जाता है। १९जनवरी १९९६में इलाहाबाद में इनका देहावसान हो गया।

एकांकी का उद्देश्य:

प्रस्तुत एकांकी 'सूखी डाली' मे संयुक्त परिवार प्रणाली का चित्रण किया गया है । दादा जी के संगठित परिवार में छोटी बहू बेला के आ जाने से जो हलचल मच जाती है, वह प्रथम तो पूरे परिवार के लिए चर्चा का विषय बन जाती है पर दादा जी के समझाने से सब सदस्यों के व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है जिसमें व्यंग्य और कृत्रिमता का पुट है। पहले तो बेला का दम-सा घुटता है पर वह सोचती है कि सब मुझे पराई क्यों समझते हैं और अन्त में परिस्थिति से समझौता कर इन्दु के समक्ष आत्मसमर्पण कर देती है। इस एकांकी द्वारा लेखक ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि इस एकांकी द्वारा लेखक ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि नई बहू जब अपनी ससुराल में आती है तो उसे सारा वातावरण नया लगता है। वह अपनी ससुराल की मायके से तुलना कर बैठती है। यह तुलना ससुराल वालों को बुरी लगनी स्वाभाविक है। यहीं झगड़े का सूत्रपात होता है जो परिवार में असन्तोष का कारण बनता है। अतः ऐसी स्थिति से बचना चाहिए तथा परिवार में स्वयं को ढालने की कोशिश करनी चाहिए। इस एकांकी द्वारा यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि परिवार में एक दूसरे पर आक्षेप, ईर्ष्या, द्वेष व कटूक्तियों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। एक दूसरे पर व्यंग्यपूर्ण भाषा के प्रयोग से बचना चाहिए।एकांकी में कौशल से लेखक ने यह भी व्यक्त कर दिया है कि आधुनिक युग में नई पीढ़ी भले ही तानाशाही को ठीक न समझे पर परिवार को एक सूत्र में बाँधे रखने का यही तरीका उपयुक्त होता है जो चरित्र दादा जी ने

निभाया है। एकांकी का अन्त बहुत सुन्दर है। दादा जी चाहते हैं कि जिस प्रकार वटवृक्ष की डालियाँ उसे एक छतनार विशाल वृक्ष का रूप देती हैं उसी फ्कार परिवार का हर सदस्य एक डाली के समान है और वृक्ष की एक भी डाली टूटने से वृक्ष असुन्दर हो जाता है। अत परिवार के हर सदस्य को मिलजुल कर रहना चाहिए। छोटी बहू को डर है कि वह कहीं परिवार से अलग हो गई तो वृक्ष की टूटी हुई डाल के समान ही सूख न जाए। अत वह समझौता कर लेती है।

लेखक ने परिवार के सदस्यों के मानसिक अन्तर्द्वद्ध को बड़ी सूझबूझ से दर्शाया है। परिवार के सदस्यों में विचारों व स्वभाव में विभिन्नता होते हुए भी एकता की ऐसी डोरी बँधी हुई है कि परिवार सुचारू रूप से चलता रहता है। यही इस एकांकी का उद्देश्य है । लेखक का विचार है कि परिवार की डोर का एक सिरा किसी ऐसे व्यंक्ति के हाथों में होना आवश्यक है जिसका सम्मान पूरा परिवार करता हो, उसकी बात मानता हो, तभी परिवार की कुशलता संभव है। अश्क जी का यह नाटक पश्चिमी तकनीक से प्रभावित है। इसका अन्त दुःखान्त नहीं, सुखान्त है। इसमें प्रभावोत्पादकता है। अश्क जी का यह सामाजिक एकांकी एक सफल रचना है। दादा जी की परिपक्व बुद्धि के परिणामस्वरूप एक घर के कार्य में सहयोग न देने वाली स्त्री भी सहयोग देने लगती है। यहाँ गांधी जी के दर्शन का प्रभाव लेखक पर दिखाई देता है कि कठोरता पर कोमलता' से विजय प्राप्त की जा सकती है और लेखक अपने उद्देश्य में सफल हुआ है।

पात्र एवं चरित्र चित्रण:

साहित्य के विविध रूप - उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक, एकांकी में जीवन का प्रतिबिंब या उसके रहस्यों का उद्घाटन विविध मानव व्यक्तियों के चरित्र द्वारा होता है। आज साहित्य में व्यक्ति की प्रतिष्ठा चाहे वह सामाजिक हो या एकांगी वैयक्तिक का साधन चरित्र-चित्रण है। इसलिए नाटक या उपन्यास के उद्दिष्ट प्रभाव की प्राप्ति के लिए चरित्र-चित्रण यहाँ एक साधन है, वहाँ सजीवता और स्वाभाविकता की प्राप्ति के लिए अपने में एक साध्य भी है। 'सुखी डाली' एकांकी में बेला जैसी नारियाँ भी है जो पुरानेपन से समझौता न कर पाने के कारण परिवार की स्वाभाविक गति में अवरोध उत्पन्न कर देती है। तथा मझली भाभी जैसी नारी भी हैं जो टोले-पड़ोस की कलंक कहानियाँ सुनने में पर्याप्त रुचि रखती हैं। ये समस्त नारियों के विभिन्न रूप प्रस्तुत करने के साथ-ही-साथ विभिन्न पारिवारिक समस्याओं पर भी प्रकाश डालते हैं।

'सुखी डाली' एकांकी में उपेन्द्रनाथ अश्क जी द्वारा पात्रों के चारित्रित विकास में मध्यमवर्गीय संसार मुखर हो उठे हैं। दादा मूलराज जानते हैं कि संयुक्त परिवार को वे अधिक दिन नहीं चला सकते है। उन्हें चिंता हैं कि परिवार टूटने नहीं देते हैं। चाहे घुटन और निराशा में क्यों न जीना पड़े।

संवाद और भाषा:

'अश्क जी' की एकांकी नाटकों का संवाद सीधे, सरल, प्रभावी, पात्रनुकूल और प्रसंगानुकूल है। इस एकांकी में कहीं-कहीं संवाद छोटे हैं, तो कहीं-कहीं काफी लंबे है। संवाद नाटक के विभिन्न रासायनिक द्रव्यों को एक सूत्र में मिलाकर नाट्य शरीर को सजीवता प्रदान करता है और उसे प्रभावशाली बनाता हैं। अश्क ने संवादों की स्वाभाविकता का बहुत ध्यान रखा है। उन्होने प्रत्येक पात्र के मुँह से एक प्रकार की एवं एक तरह की भाषा का प्रयोग नहीं किया है। अपितु पात्रों के अनुकूल ही संवादों को एस प्रकार गढ़ा जय की भाषा चलती हुई मुँहावरेदार टकसाली, पात्र और समय के सर्वथा अनुकूल रहती है।

निष्कर्ष:

'अश्क' जी की एकांकियों की कथावस्तु पर्याप्त सुगठित और प्रभावोत्पादक है। उन्होने मध्यमवर्गीय समाज जीवन की नस-नस पहचानने की कोशिश की है। 'अश्क' जी की 'सुखी डाली' एकांकी के पात्र हमारे जीवन का दर्पण बनकर प्रस्तुत होते हैं। एकांकी में संवाद कहीं-कहीं छोटे हैं और कहीं बड़े हैं, फिर भी संजने में आसान है। इस एकांकी की भाषा शैली प्रतिकात्मक या सांकेतिक है।

अश्क जी ने इस एकांकी में नाट्य शैली, संवाद शैली, प्रतिकात्मक शैली, व्यंगात्मक शैली, दृश्य शैली आदि शैलियों का प्रयोग किया है। इस एकांकी के माध्यम से हमारे सामाजिक जीवन के किसी-न-किसी यथार्थ को प्रस्तुत किया है।

संदर्भ सूची:

१. डॉ. जगदीशचंद्र माथुर- नाटककार 'अश्क'
२. डॉ. उमाशंकर सिंह, समस्या नाटककार 'अश्क'
३. उपेन्द्रनाथ 'अश्क', पच्चीस श्रेष्ठ एकांकी संग्रह
४. भैरव प्रसाद गुप्त, व्यक्तित्व नाटककार 'अश्क'
५. उपेन्द्रनाथ 'अश्क', बड़े खिलाड़ी, इतिहास के अंदर इतिहास

प्रणवकुमार जमसुभाई पटेल